

# मान



## मन- म-मस्तिष्क, न-नजर, अर्थात मस्तिष्क की नजरा।

### अंशक 'मानव'

**म**न मस्तिष्क की नजर से उत्पन्न होने वाले प्रकाश पुंज का नाम है। "आधिक रचना के गुणात्मक ऋमिक विकास से हित बढ़कता है। जो उसे निकलने वाली तरंग तीसरी आँख को कम्पित करती है। जिससे प्रकाश पैदा होता है। उसी प्रकाश को 'मन' कहते हैं।" मन सूक्ष्म प्रकाश है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म को दिखाता है। जिसका एहसास शरीर की ज्ञानेन्द्रियों करती है। मन भटकाता नहीं है भटकने की क्रिया व्यक्ति की चाहत से होती है। मन तो भटकते हुए मुसाफिर को सही मार्ग दिखाता है। मन प्रकाश होने के कारण उत्पन्न होने वाली इच्छा को देखकर उसे मार्ग दिखाता है। मन सपी प्रकाश जब इच्छित विषय पर पड़ता है तो उसके अन्दर तक जाता है। जिससे उसका गुण हवा बनकर निकलता है। जिसे शरीर की ज्ञानेन्द्री खींचकर एहसास करती है। मन की डोर इच्छा से बंधी होती है। इसलिए इच्छा बदलते ही वह उस इच्छा पर पहुँच जाता है। इसलिए जब तक पहली इच्छा की पूरी जानकारी न हो जाये तब तक उसे बदलना नहीं चाहिए। मन विल की बंधक से उत्पन्न होने वाला प्रकाश है। इसलिए कभी रुकता नहीं है। जब विचार चल रहा होता है उसमें होता है, जब इच्छा पैदा होती है तो उसे देखाता है और जब व्यक्ति सो जाता है तो इच्छित विषय के लिए मार्ग तैयार करता है। मन एक प्रकाशीय शक्ति है। मन देखने के साथ विषय को पूरा करने के लिए प्रकाश छोड़ता है। जिससे विषय का निर्माण होता है। पर इसे विषय पर अधिक से अधिक समय तक केंद्रित करना चाहिए। ध्यान के समय इसे रोकने की बात की जाती है पर वह कभी रुकता नहीं है। इसे सिर्फ केंद्रित करना चाहिए। केंद्रित करने से यह प्राकृतिक गति से विषय का भेदन करता है। उसकी जानकारी देता है और ऊर्जा उत्पन्न कर उसके गुण को शरीर को प्रेषित करता है। जिसका ध्यान किया जाता है उसका गुण शरीर में आने लगता है। विषय बदलते ही मन नये विषय पर चला जाता है। जब व्यक्ति विषय में व्यथित होकर उलझ जाता है तो मन अपने प्रकाश से व्यथित करने वाली ऊर्जा को खत्म करके उचित मार्ग पर

लाकर सामान्य बनाता है। मन सदैव शक्ति रह कर शरीर में उत्पन्न होने वाले विषय की जानकारी देता रहता है।

मन शरीर के अन्दर का सूर्य है जो हर विषय को ऊर्जावान बनाकर एक प्रकाश छोड़ देता है। जिससे उस विषय का निर्माण होता है। जब शरीर में विचार चल रहा होता है तब मन अपने प्रकाश से सक्रिय कर बाहर ले जाता है। उसे क्रियाशील बनाता है और उसके निर्माण के लिए जलवायु बनाकर उसे पूरा कराता है। विषय शरीर का जल तत्व होता है और मन उसका प्रकाश तत्व होता है। विषय के बार-बार बदलते रहने से प्रकाश ज्यवा देर तक रुक नहीं पाता है। जिसके कारण से विषय पूरा नहीं हो पाता है। इसलिए विषय कम बनायें और उसकी गति प्राकृतिक रखें। ऐसा करने से मन प्रकाश उसमें रुक पाता है और विषय पूरा होता है। विचार की गति जब प्राकृतिक हो जाती है तो भावना में परिवर्तित हो जाती है। जिसे मन का प्रकाश ऊर्जावान बना देता है। जिसका एहसास शरीर करने लगता है। एहसास के बाद उस गुण की ऊर्जा मन प्रकाश के साथ बाहर निकल जाती है। जो विषय को पूरा करने के लिए जलवायु बनाकर एहसासित विषय के बीज को पैदा करती है जिसमें मन का प्रकाश जीव प्रकाश बनकर उसका स्वाभाविक विकास करके उसका प्रतिफल देता है। शरीर में पैदा होने वाली हर इच्छा मन के प्रकाश से पूरी होती है। शरीर में जिस पदार्थ की जरूरत होती है। उसे खाने की इच्छा पैदा होती है। उसे प्राप्त करने का मार्ग मन का प्रकाश ही दिखाता है और उसे खा लेने के बाद उसे पचाकर गुण अलग करके यथा स्थान पहुँचाने का कार्य मन प्रकाश ही करता है। शरीर में जो रोग प्रतिरोधी जीवायु बनते है उनका निर्माण मन से निकलने वाले प्रकाश से ही होता है। शरीर में कोई रोग हो या अन्य कोई परेशानी उसके ठीक होने का सकारात्मक विचार रखने से मन का प्रकाश उसे खत्म करने के लिए जीवायु बनाने लगता है जो उस समय तक को खत्म कर देता है। मन का प्रकाश सकारात्मक सोच बनाये रखने पर समस्या बढने वाले जीवायु को खत्म करने का भी कार्य करता है। शरीर में कोशिका का निर्माण मन के प्रकाश से ही

होता है। भविष्य में किन विषयों की आवश्यकता होगी या किसका सामना करना पड़ेगा, इसकी जानकारी मन को होती है। इसलिए उस समय तक जिससे उसको खत्म किया जा सकता है उसका निर्माण मन का प्रकाश कर देता है।

मन कभी रुकता नहीं जब व्यक्ति तेज सोचता है तो तेज चलता है। जब व्यक्ति धीमे सोचता है तो उसकी गति धीमी हो जाती है और जब व्यक्ति एक विषय पर रुक जाता है तो मन प्राकृतिक गति से उसका भेदन करते हुए आगे बढ़ता है। जब व्यक्ति सो जाता है तब मन सोचे गये विषयों के सूक्ष्म स्वरूप को देखते समय उस विषयों की रुकावट की ऊर्जा को खत्म कर विषय को आगे बढ़ाने की क्रिया करता है। कभी-कभी वह दृश्य स्वप्न में दिखायी पड़ जाता है। सोते समय मन शरीर के अन्दर उत्पन्न होने वाले सभी विषयों की रुकावट दूरकर उसे मार्ग देकर निर्माण करने का प्रकाश छोड़कर शरीर को थकान दूर कर देता है। जागते समय से ज्यवा अच्छा कार्य मन सोते समय करता है। अपने इष्ट का ध्यान करते समय मन ईष्ट की ऊर्जा लेकर सोने की तरह ही जीवन से सम्बन्धित विषयों को देखने लगता है और बाधा पहुँचाने वाले विषयों को खत्म करने के लिए आकृति स्वरूप प्रकाश बनाकर अन्ध-अन्ध कर निर्माण करके उसे खत्म करता है।

मन इच्छित विषय के लिए कार्य करता है। इसलिए इच्छा सकारात्मक होने से निर्माण का कार्य होता है। जो प्रकृति में अच्छे स्वभाव को बढ़ाता है। इच्छा परिवर्तनशील होने पर मन से निकलने वाला प्रकाश कई गुणों का विकास करता है। जिसमें विपरित गुण भी पैदा हो जाते है जो आपस में टकराते है और परेशानी होती है। इसलिए इच्छा कम से कम बनानी चाहिए और विपरित इच्छा तो पैदा ही नहीं होने देना चाहिए। ऐसा करने से मन निर्दोष रूप से कार्य पूरा कर पाता है। इच्छा तेज नहीं चलानी चाहिए इसकी परत प्राकृतिक रखनी चाहिए। ऐसा करने से मन शक्तिशाली प्रकाश बन पाता है। जो विषय को पूरा कर लेता है। आप अपने मन से अपने मन को पहचाने इसी शुभकामना के साथ।